

कुछ भी करवा लेना, प्रभुत्व) और वशित्व (प्रकृति को वश में कर लेना।)

अष्टांग वि. (तत्.) 1. योग क्रिया के आठ क्षेत्र यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि 2. सूर्य को दिया जाने वाला विशेष अर्घ्य जिसमें जल, क्षीर, कुशाग्र, घी, मधु, दही, रक्त चंदन और करवीर होते हैं 3. शरीर के आठ अंग जिनसे साष्टांग प्रणाम किया जाता है, अर्थात् घुटना, हाथ, पाँव, छाती, सिर, वचन, दृष्टि और बुद्धि **वि.** 1. गौतम बुद्ध द्वारा निर्दिष्ट मार्ग जिसमें दुःखों से निवृत्ति पाने के आठ द्वार अर्थात् सम्यक्दृष्टि, सम्यक् संकल्प, सम्यक् वाक्, सम्यक् कर्म, सम्यक् आजीव, सम्यक् व्यायाम, सम्यक् स्मृति, सम्यक् समाधि 2. आठ अवयव वाला, जिसके आठ अंग या भाग हो 3. आठ पहर।

अष्टांग आयुर्वेद पुं. (तत्.) अष्टायुर्वेद, आयुर्वेद के आठ अंग या विभाग शल्य चिकित्सा, शलाक्य, कायचिकित्सा, भूतविद्या, कौमारभृत्य, अंगदतंत्र, रसायनतंत्र और बाजीकरण।

अष्टांग योग पुं. (तत्.) महर्षि पतंजलि द्वारा निर्दिष्ट योग साधना जिसके आठ अंग हैं: यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि।

अष्टांशक पुं. (तत्.) आठ-आठ के अंश वाला दे. अठपेजी।

अष्टाक्षर पुं. (तत्.) आठ अक्षरों का मंत्र, विष्णु का मंत्र 'ॐ नमो नारायणाय', वल्लभ संप्रदाय के अनुसार 'श्री कृष्णः शरणं मम' मंत्र **वि.** (तत्.) आठ अक्षरों का, आठ अक्षर वाला।

अष्टादश वि. (तत्.) अठारह।

अष्टाध्यायी स्त्री. (तत्.) आठ अध्यायों वाला पाणिनीय व्याकरण का प्रमुख ग्रंथ जिसमें आठ अध्याय हैं।

अष्टावक्र पुं. (तत्.) कहोड ऋषि के पुत्र तथा एक प्रसिद्ध ऋषि जिनका शरीर आठ स्थानों से टेढ़ा मेढ़ा था **वि.** जिसके आठ अंग टेढ़े हो, कुरूप।

अष्टाह्निक वि. (तत्.) आठ दिनों का या आठ दिनों से संबंधित जैसे- अष्टाह्निक यज्ञ-आठ दिनों तक चलने वाला यज्ञ।

अष्टि स्त्री. (तत्.) 1. बीज 2. बीज या वृक्ष की छाल 3. खेल का पाँसा।

अष्टि स्त्री. (तत्.) 1. पत्थर का टुकड़ा 2. पत्थर के टुकड़े जैसा कठोर पदार्थ जैसे- गुठली के बीच का कठोर भाग इत्यादि।

अष्ठिल वि. (तत्.) 1. अष्ठि जैसा 2. अष्ठि से युक्त।

अष्ठिलिका स्त्री. (तत्.) 1. अष्ठि का छोटा टुकड़ा 2. छोटे आकार वाली अष्ठि।

अष्ठीला स्त्री. (तत्.) आयु. 1. मूत्राशय का एक रोग जिसमें अफरा होने से पेशाब नहीं होता और गाँठ पड़ जाती है 2. एक रोग जिसमें नाभि के नीचे शोथ हो जाता है **चिकि.** 1. गुर्दे की एक बीमारी 2. पत्थर की गोली 3. अनाज का बीज।

असंकुल वि. (तत्.) जहाँ भीड़भाड़ न हो, खुला (स्थान), चौड़ा (मार्ग) **विलो.** संकुल

असंक्रांत वि. (तत्.) 1. जिसका संक्रमण न हुआ हो 2. जो स्थानांतरित न हुआ हो, जिसका स्थान बदला न हो 3. पत्थर की गोली **चिकि.** गुर्दे की एक बीमारी।

असंक्रांत मास पुं. (तत्.) चांद्र पंचांग में प्रायः प्रत्येक तीसरे वर्ष आने वाला सूर्य संक्रांति से रहित तेरहवाँ महीना जिससे चांद्र और सौर पंचांगों की दिनसंख्या का अंतर समायोजित हो जाता है, अधिक मास, मलमास, पुरुषोत्तम मास।

असंक्रामक वि. (तत्.) (वह रोग आदि) जो संक्रामक न हो, जो अन्यो को संक्रमित न करे, न फैलने वाला **विलो.** संक्रामक।

असंक्राम्य वि. (तत्.) 1. जिसे कोई संक्रमण न हो, संक्रमण से मुक्त 2. जो संक्रमण से न फैले **विलो.** संक्राम्य।

असंक्राम्य पादप पुं. (तत्.) दे. प्रतिरक्षी पादप।

असंख्य वि. (तत्.) गणि. जिनकी गिनती न हो सके, अनगिनत, बेशुमार, बहुत अधिक, शून्य में